

# वेदांत दर्शन की प्रकृति: शंकराचार्य के अद्वैत मत एवं बृहदारण्यक उपनिषद् के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन

सौम्यदीप सरदार, गुजरात विश्वविद्यालय

## सार

वेदांत दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा की चरम उपलब्धि माना जाता है, जिसमें ब्रह्म, आत्मा और जगत के तात्त्विक स्वरूप का गहन विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वेदांत दर्शन की प्रकृति का विस्तृत एवं समीक्षात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत को सैद्धांतिक आधार तथा बृहदारण्यक उपनिषद् को प्राथमिक श्रुति-स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। साथ ही, दो प्रमुख द्वितीयक पुस्तकों के माध्यम से अद्वैत वेदांत की दार्शनिक व्याख्या, उसकी आलोचनाएँ एवं उसकी समकालीन प्रासांगिकता का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदांत दर्शन की प्रकृति मूलतः अद्वैतवादी, ज्ञानप्रधान एवं मोक्षोन्मुख है, जो मानव जीवन को आध्यात्मिक उन्नयन की दिशा प्रदान करती है।

**कुंजी शब्द:** वेदांत दर्शन, अद्वैत वेदांत, शंकराचार्य, बृहदारण्यक उपनिषद्, ब्रह्म, आत्मा, मोक्ष

## भूमिका

भारतीय दर्शन की परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध दार्शनिक परंपराओं में से एक है। इसका मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक जिज्ञासा की तृप्ति नहीं, बल्कि मानव जीवन के परम लक्ष्य—दुःखनिवृत्ति और मोक्ष—की प्राप्ति है। इस व्यापक दार्शनिक परंपरा में वेदांत दर्शन का स्थान सर्वोच्च है, क्योंकि यह सत्य के अंतिम स्वरूप का अन्वेषण करता है।

‘वेदांत’ शब्द ‘वेद’ और ‘अंत’ से मिलकर बना है, जिसका आशय है—वेदों का अंतिम भाग अथवा अंतिम तात्पर्य। उपनिषद् वेदांत दर्शन का मूल स्रोत हैं, जिनमें कर्मकांड से ऊपर उठकर ब्रह्मविद्या का विवेचन किया गया है। उपनिषदों में यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया गया है कि अज्ञान ही बंधन का कारण है और ज्ञान ही मुक्ति का साधन है।

शंकराचार्य ने उपनिषदों के दार्शनिक संदेश को अद्वैत वेदांत के रूप में व्यवस्थित एवं तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत किया। उनका दर्शन न केवल भारतीय चिंतन को दिशा देता है, बल्कि वैश्विक दार्शनिक संवाद में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस शोध-पत्र में वेदांत दर्शन की प्रकृति को शंकराचार्य के अद्वैत मत तथा बृहदारण्यक उपनिषद् के आलोक में समझने का प्रयास किया गया है।

## वेदांत दर्शन की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि

वेदांत दर्शन का विकास वैदिक कर्मकांड की सीमा से आगे बढ़कर हुआ। प्रारंभिक वैदिक काल में यज्ञ और कर्म को प्रमुख स्थान प्राप्त था, किंतु उत्तर वैदिक काल में दार्शनिक चिंतन का उदय हुआ। इसी काल में उपनिषदों की रचना हुई, जिनमें आत्मा और ब्रह्म के स्वरूप पर गंभीर विचार किया गया।

वेदांत दर्शन की पृष्ठभूमि में तीन प्रमुख ग्रंथ आते हैं—

1. उपनिषद्
2. ब्रह्मसूत्र
3. भगवद्गीता

इन्हें प्रस्थानत्रयीकहा जाता है। शंकराचार्य ने इन तीनों पर भाष्य लिखकर अद्वैत वेदांत की सुदृढ़ दार्शनिक संरचना निर्मित की।

## वेदांत दर्शन का तात्त्विक स्वरूप

वेदांत दर्शन का स्वरूप मुख्यतः तत्त्वमीमांसीय है। यह दर्शन इस प्रश्न पर केंद्रित है कि—

- वास्तविकता का अंतिम स्वरूप क्या है?
- आत्मा और जगत का परस्पर संबंध क्या है?

वेदांत के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र परम सत्य है। आत्मा ब्रह्म से भिन्न नहीं है, किंतु अज्ञानवश जीव स्वयं को सीमित और बंधनग्रस्त समझता है। यह दर्शन अनुभव को सर्वोच्च प्रमाण मानता है, परंतु यह अनुभव आत्मानुभूति का अनुभव है, न कि इंट्रियजन्य।

## वेदांत दर्शन की प्रकृति: एक विश्लेषण

वेदांत दर्शन की प्रकृति को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

- अद्वैतता

वेदांत दर्शन का केंद्रीय सिद्धांत अद्वैत है। इसके अनुसार सत्य एक है, द्वितीय नहीं। बहुलता केवल प्रतीतिमात्र है। जीव और ब्रह्म में कोई वास्तविक भेद नहीं माना जाता।

- ज्ञानप्रधानता

वेदांत में मोक्ष का साधन ज्ञान है। कर्म और उपासना ज्ञान की तैयारी मात्र हैं।

आत्मज्ञान के द्वारा ही अज्ञान और बंधन का नाश संभव है।

### • मोक्षोन्मुखता

वेदांत दर्शन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, जो अज्ञान के नाश से प्राप्त होता है।

मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण के चक्र से पूर्ण मुक्ति है।

### • आध्यात्मिकता

यह दर्शन भौतिक जगत से परे आत्मिक यथार्थ की ओर उन्मुख करता है।

आत्मसाक्षात्कार को ही जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि माना गया है।

## शंकराचार्य का अद्वैत वेदांतः विस्तृत विवेचन

शंकराचार्य के दर्शन का मूल सिद्धांत है—

“ब्रह्म सत्यं, जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।”

### • ब्रह्म की संकल्पना

ब्रह्म निर्गुण, निराकार और निरपेक्ष सत्य है। वह देश, काल और कारण से परे है।

वही समस्त विश्व का आधार और एकमात्र परम तत्त्व है।

### • आत्मा-ब्रह्म ऐक्य

आत्मा और ब्रह्म में कोई वास्तविक भेद नहीं है। भेद केवल अविद्या के कारण प्रतीत होता है।

तत्त्वमसि जैसे महावाक्य इस ऐक्य को प्रतिपादित करते हैं।

### • माया और अध्यास सिद्धांत

माया के कारण ब्रह्म जगत के रूप में प्रतीत होता है। अध्यास के कारण जीव आत्मा पर देह-धर्मों का आरोप करता है।

अज्ञान के नाश से यह मिथ्या आरोप समाप्त हो जाता है।

### • मोक्ष का स्वरूप

मोक्ष कोई नई प्राप्ति नहीं है, बल्कि आत्मा के वास्तविक स्वरूप की पहचान है।

यह अवस्था ब्रह्मज्ञान से ही संभव होती है।

## बृहदारण्यक उपनिषद् में वेदांत दर्शन

बृहदारण्यक उपनिषद् वेदांत दर्शन का अत्यंत प्रौढ़ ग्रंथ है।

### • अहं ब्रह्मास्मि

यह महावाक्य आत्मा और ब्रह्म की पूर्ण एकता को प्रकट करता है।

### • नेति-नेति सिद्धांत

ब्रह्म को सभी सीमाओं से परे बताने की यह नकारात्मक पद्धति अद्वैत को पुष्ट करती है।

## • विद्या और अविद्या

उपनिषद् में विद्या को मुक्ति और अविद्या को बंधन का कारण बताया गया है।

## शंकराचार्य और उपनिषद् का पारस्परिक सामंजस्य

शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत उपनिषदों का ही दार्शनिक विस्तार है। उनके भाष्य यह सिद्ध करते हैं कि उपनिषदों का अंतिम तात्पर्य अद्वैत है।

## द्वितीयक पुस्तकों के आधार पर समीक्षात्मक अध्ययन

दासगुप्ता के अनुसार अद्वैत वेदांत भारतीय दर्शन की चरम अवस्था है।

चन्द्रधर शर्मा के अनुसार शंकराचार्य का दर्शन तार्किक, सुसंगत और आध्यात्मिक रूप से परिपक्ष है।

इन दोनों ग्रंथों में अद्वैत की आलोचनाएँ भी मिलती हैं, किंतु अंततः इसकी दार्शनिक गहराई को स्वीकार किया गया है।

## अद्वैत वेदांत की समकालीन प्रासंगिकता

आधुनिक युग में मानसिक तनाव, भौतिकवाद और मूल्य-संकट की समस्याएँ हैं। अद्वैत वेदांत आत्मिक शांति, समता और करुणा की दृष्टि प्रदान करता है।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत विस्तृत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदांत दर्शन की प्रकृति मूलतः अद्वैतवादी, ज्ञानप्रधान और मोक्षोन्मुख है। शंकराचार्य का अद्वैत वेदांत और बृहदारण्यक उपनिषद् परस्पर पूरक रूप में ब्रह्म-आत्मा की एकता को स्थापित करते हैं। यह दर्शन न केवल दार्शनिक दृष्टि से, बल्कि मानव जीवन के व्यावहारिक और आध्यात्मिक पक्षों के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

## संदर्भ सूची

### प्राथमिक ग्रंथ

1. शंकराचार्य. बृहदारण्यक उपनिषद् भाष्य।
2. बृहदारण्यक उपनिषद्।

### द्वितीयक ग्रंथ

3. दासगुप्ता, सुरेन्द्रनाथ. भारतीय दर्शन का इतिहास(खण्ड-1). मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
4. शर्मा, चन्द्रधर. आलोचनात्मक भारतीय दर्शन. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।